Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

जनपद कौशाम्बी में व्यवसायिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन

नीलेश कुमार
शोधार्थी, भूगोल विभाग, भारतीय महाविद्यालय, फर्रूखाबाद,उत्तर प्रदेश।
डॉ0 प्रेम शंकर पाण्डेय
शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, भारतीय महाविद्यालय, फर्रूखाबाद।

Article Info
Volume 8, Issue 1

Page Number : 106-113

Publication Issue :
January-February-2025

Article History
Accepted : 20 Jan 2025
Published : 05 Feb 2025

सारांश – क्रियाशील जनसंख्या का विभिन प्रकार के व्यवसायों में संलग्न होना जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना कहलाता हैं। जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना विशिष्ट कार्यबल निर्भरता रोजगार और बेरोजगारी से प्रकट होती है। यदि सामाजिक संरचना कृषि निर्वाह स्तर पर बनी रहती है तो व्यवस्था मे बहुत विविधीकरण नहीं होता लेकिन जब प्राकृतिक संसाधनों का व्यवासायिक स्तर पर प्रयोग किया जाता है तो व्यासायिक संरचना में विविधीकरण होता है। अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य का एक छोटा सा प्रशासनिक खण्ड है। जो कि गंगा यमुना के दोआब क्षेत्र में प्रयागराज जनपद के पश्चिम में स्थित है।प्रस्तुत शोध मे तुलनात्मक विधि पर आधारिंत है। अध्ययन मे प्रयुक्त द्वितीयक आकड़ो का संग्रहण जिला सांख्यकीय पत्रिका 2011 तथा 2021 की जनगणना पर आधारित हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कुल जनसख्या का लगभक एक चौथाई 23.86 प्रतिशत हिस्सा आलाभ कारी गतिविधियो में संलग्न है। जब कि तीन चौथाई हिस्सा गैर लाभकारी गतिविधयों 76.24 प्रतिशत मे संलगन हैं। जनसंख्या प्रवृत्ति के विशलेषण से यह पता चलता है कि कुल श्रमिको मुख्य और सीमान्त मे 2.51 प्रतिशत की दशकीय वृद्धि अंकित की गई है। जब की कुल कृषि श्रमिको मे कमी र्दज की गई है। जिसका कारण श्रमिको का कृषि गतिविधियो से उद्योग तथा निर्माण कार्यो की और आधिक आकर्षण बढा है।

संकेत शब्द – सीमान्त कर्मकार, मुख्य कर्मकार, सीमान्त कृषक, कार्यशील जनसंख्या, व्यवसायिक संरचना।

प्रस्तावना – आर्थिक रुप से क्रियाशील जनसंख्या का विभिन प्रकार के व्यवसायों में संलग्न होना जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना कहलाता हैं। किसी देश की व्यवसायिक संरचना से तात्पर्य विभिन्न व्यवसायों मे संलग्न

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

जनसंख्या के वितरण से हैं। किसी क्षेत्र की व्यवसायिक संरचना को समझने के लिये उसके कार्यबल को समझना आवश्यक होता है। कार्यबल का विश्लेषण वैज्ञानिको को केवल किसी क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक प्रगति और आर्थिक विकास के स्तर को मापने के लिए उपयोग किया जाता है। (मैत्रा 1969) बल्कि भविष्य की योजना निर्माण (चांदना और सिद्धू 1980) और जनशक्ति को संगठित करने के लिये भी किया जाता है (सिन्हा 1971)।

इसके अतिरक्त काम में भागीदारी की सीमा समाज की सामाजिक आर्थिक संरचना का सूचकांक है (राधाकृष्णन और विजयलक्ष्मी 1974) दुसरी ओर यह आयु संरचना और समाज की सामाजिक. आर्थिक और राजनीतिक मजबूरियों का एक कार्य है। व्यवसाय मुख्यतः कृषि उद्योग और सेवाओं से संबंधित हो सकता है। इस वर्गीकरण के आधार पर व्यवसाय को प्राथमिक द्वितीयक एवम तृतीयक गतिविधि में बांटा जा सकता हैं। जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना विशिष्ट कार्यबल निर्भरता रोजगार और बेरोजगारी से प्रकट होती है। किसी देश में कार्यशील और गैरकार्यशील आबादी के सही अनुपात की तसवीर प्रस्तुत करती हैं इस प्रकार व्यवासायिक संरचना किसी क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक विकास और प्रगति को भी प्रभावित करती है। क्लार्क (1971) का मत हैं की आर्थिक विकास और व्यवासायिक संरचना के मध्य घनिष्ठ संम्बन्ध हैं। यदि सामाजिक संरचना कृषि निर्वाह स्तर पर बनी रहती है तो व्यवस्था मे बहुत विविधीकरण नहीं होता लेकिन जब प्राकृतिक संसाधनों का व्यवासायिक स्तर पर प्रयोग किया जाता है तो व्यासायिक संरचना में विविधीकरण होता है। जिससे औद्योगीकरण को बढ़ावा मिलता हैं और उन्नत प्रद्यौगिकीसे विशिष्ट नौकरियों का निर्माण होता है और व्यवासायिक संरचना में विशिष्टता आती है। यह सम्पूर्ण विकास मिलकर एक नई संस्कृति को जन्म देता है।जो अधिक सेवा उन्मुख होती है। किसी भी क्षेत्र मे विभिन्न व्यवासायों को करने वाले विभिन्न लोग होते है। व्यवासायो को सामन्यतः चार श्रेणियों मे वर्गीकृत किया जाता है।

प्राथमिक व्यवसाय के अन्तर्गत कृषि पशुपालन वृक्षारोपण मत्स्यपालन एवं खनन आदि क्रियाऐं सम्मलित की जाती है।**द्वितीयक व्यवसाय** के अन्तर्गत उत्पादन करने वाले उद्योग भवन एवं निर्माण क्रियाऐं सम्मलित की जाती है।**तृतीयक व्यवसाय** के अन्तर्गत परिवाहन संचार वाणिज्य प्रंशासन एवं सेवाये सम्मलित की जाती है।**चतुर्थक व्यवसाय** के अन्तर्गत अनुसंधान एवं वैज्ञानिक कार्यो को सम्मलित किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्रः– कौशाम्बी जनपद उत्तर प्रदेश राज्य का एक छोटा सा प्रशासनिक खण्ड है। जो कि गंगा यमुना दोआब के क्षेत्र में प्रयागराज जनपद के पश्चिम में स्थित है। कौशाम्बी जनपद को प्रशासनिक दृष्टि से तीन उप विभागों (तहसील) एवं आठ विकास खण्डों में बॉटा गया है। इसका कुल क्षेत्रफल 1903.17 वर्ग किलोमीटर है। इसका विस्तार 25^0 15′ 00′′ उत्तर से 25^0 48′ 40′′ उत्तरीय अक्षांश तक तथा देशान्तरीय विस्तार 81^0 08′ 30′′ से पूर्वी देशान्तर से 81^0 47′ 45′′ पूर्वी देशान्तर तक है। सन् 2021 के संशोधित जनगणना अनुमान के अनुसार इसकी जनपद की कुल जनसंख्या 19,200,000, है। कौशाम्बी जनपद साक्षरता के स्तर मे उत्तर प्रदेश का पिछडा क्षेत्र है।

उददेश्य – प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उददेश्य है।

(1) 2001 से 2011 के मध्य जिले की व्यवासायिक संरचना में हुये परिवर्तन का मूल्यांकन करना।

(2) कृषि से गैरकृषि व्यवसाय के बदलाव का मूल्यांकन करना।

(3) 2011 से 2021 के मध्य औद्योगिक श्रेणियों मे श्रमिको की दशकीय वृद्वि का आकलन करना।

अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र

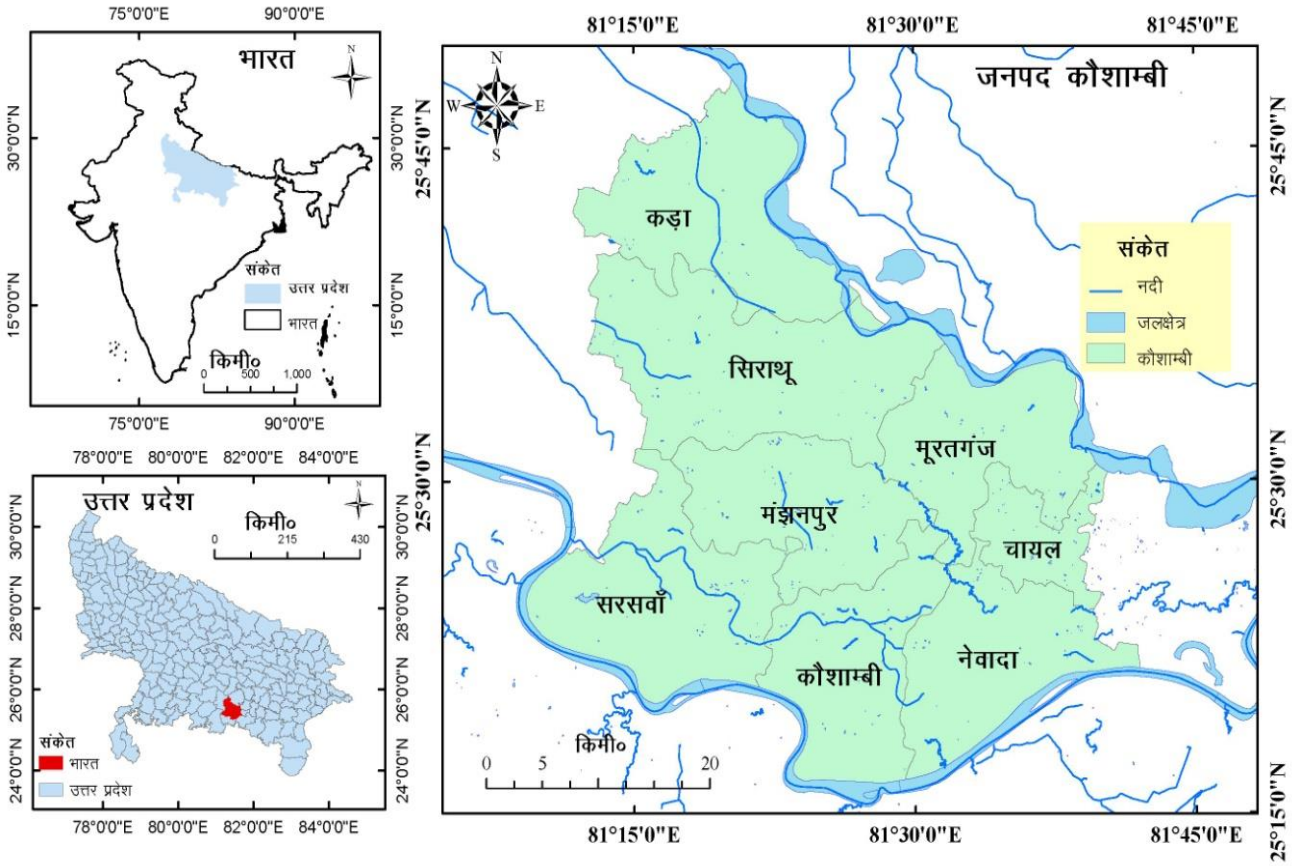

चित्र संख्या–1, *कौशाम्बी जनपद अवस्थितिक मानचित्र,*

आकड़ा स्रोत एवं विधितन्त्र – प्रस्तुत शोध पत्र मे अध्ययन को सुगम बनाने के लिए तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध मे मुख्य रुप से द्वितीयक आकड़ो का प्रयोग किया गया हैं। अध्ययन मे प्रयुक्त द्वितीयक आकड़ो का संग्रहण जिला सांख्यकीय पत्रिका 2011 तथा 2021 की जनगणना पर आधारित हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र पत्रिकाओ समाचार पत्र एवम शोध पत्रो तथा जनसांख्यकीय ग्रन्थो के विश्लेषण को माध्यम बनाया गया है। जो विभिन्न सरकारी प्रकाशनो अभिलेखो एवम शोध पत्रो से प्राप्त हुये है ं।

परिणाम एवं विश्लेषण – कौशाम्बी जनपद की व्यवासायिक संरचना के अध्ययन में मुख्य और सीमान्त कर्मकार कृषक कृषि श्रमिक परिवारिक श्रेणी मे लगी जनसंख्या से सम्बन्धित अध्ययन किया गया हैं। विविध आर्थिक गतिविधियों में संलग्न श्रमिकों की संख्या कौशाम्बी जनपद के समाजिक आर्थिक विकास का स्पष्ट संकेतक है।

अध्ययन क्षेत्र मे कार्यरत जनसख्या संरचना के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कुल जनसख्या का लगभक एक चौथाई 27.71 प्रतिशत हिस्सा आलाभ कारी गतिविधियो में संलग्न है। जब कि तीन चौथाई हिस्सा गैर लाभकारी गतिविधियों 72.29 प्रतिशत मे संलगन हैं । 2011 में कुल जनसंख्या में 9.73 प्रतिशत कृषक 6.67 प्रतिशत श्रमिक तथा 1.24 प्रतिशत परिवारिक श्रेणी एंव 10.34 प्रतिशत जनसख्या पशुपालन में कार्यरत थी।

सारणी संख्या–1

कौशाम्बी जनपद में 2011 से 2021 के मध्य विभिन्न श्रेणियों मे संलग्न श्रमिकों की संख्या

क्र•स•	श्रेणी	जनसंख्या 2011	जनसंख्या 2021
1	कृषक	9.73	6.49
2	कृषि श्रमिक	6.67	9.94
3	पारिवारिक	10.07	3.94
4	पशुपालन	1.24	0.95
5	अन्य कर्मकार	4.64	5.91
6	कुल मुख्य कर्मकार	20.33	22.21
7	सीमान्त कर्मकार	11.34	11.97
8	व्यापार एवं वाणिज्य	4.31	4.91
9	कुल कर्मकार	31.67	34.18

स्रोत– *जिला सांख्यकीय पत्रिका 2011 तथा 2021,*

चित्र संख्या– 2

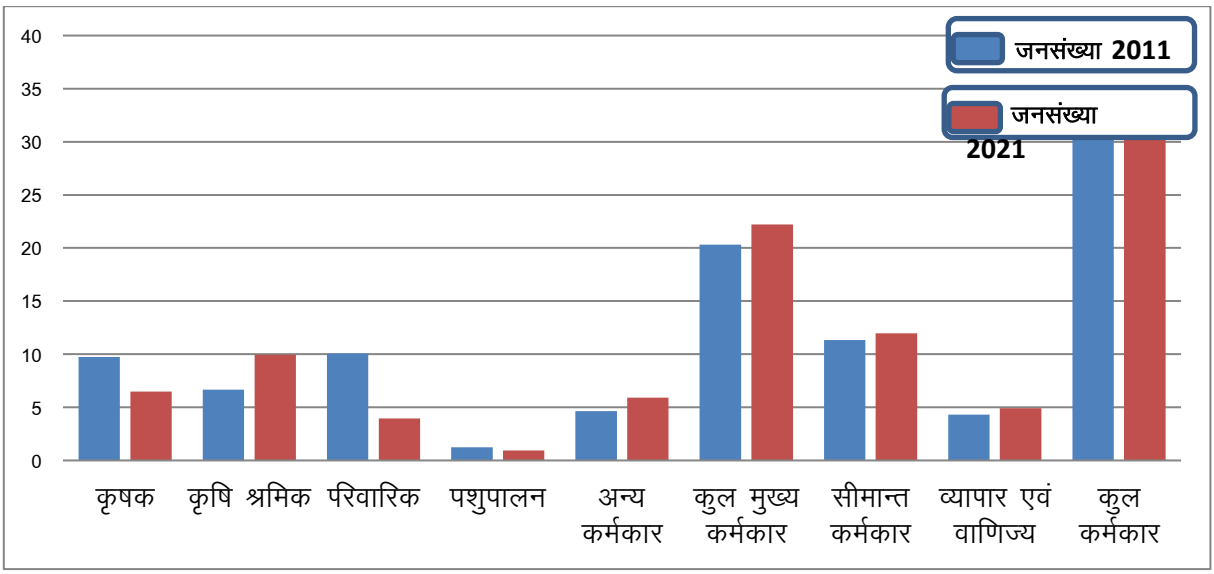

कौशाम्बी जनपद में 2011 से 2021 के मध्य विभिन्न श्रेणियों की व्यवासायिक संरचना

कौशाम्बी जनपद की व्यवसायिक संरचना 2011 से 2021 के मध्य के दशक में कृषक पशुपालन तथा पारिवारिक श्रेणी में गिरावट आई हैं। जब कि अन्य सभी क्षोत्रो मे मामूली सी वृद्धि हुई हैं। सर्वाधिक गिरावट –6.13 पशुपालन के क्षेत्र मे हुई है इसके पश्चात 3.24 प्रतिशत की कमी कृषक श्रेणी में आई तथा सबसे कम कमी पारिवारिक श्रेणी मे मात्र 0.29 प्रतिशत की हुई है।

सारणी संख्या.–2

कौशाम्बी जनपद में 2011 से 2021 के मध्य विभिन्न श्रेणियों की व्यवासायिक संरचना में परिवर्तन

क्र•स•	श्रेणी	परिवर्तन
1	कृषक	-3.24
2	कृषि श्रमिक	3.24
3	पारिवारिक	-6.13
4	पशुपालन	-0.24
5	अन्य कर्मकार	1.24
6	कुल मुख्य कर्मकार	1.88
7	सीमान्त कर्मकार	0.63
8	व्यापार एवं वाणिज्य	0.10
9	कुल कर्मकार	2.51

कुल जनसखया में श्रमिको का अनुपात लगभक 28 प्रतिशत ही रहा है। मुख्य श्रमिको और सीमान्त श्रमिको के अनुपात में 2011 से 2021 के मध्य 1.88 प्रतिशत तथा 0.63 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 2011 से 2021 के मध्य सर्वाधिक कमी पशुपालन मे 6.31 की कमी अंकित की गई। 2011 मे पशुपालन में 10.07 प्रतिशत जनसख्या संलग्न थी जो कि 2021 में घट कर मात्र 3.94 प्रतिशत रह गई तत्पश्चात कृषको में 3.24 प्रतिशत की कमी देखी गई है। 2011 में कुल जनसंख्या का 9.73 प्रतिशत व्यक्ति कृषक थें परन्तु 2021 में घट कर मात्र 6.94 प्रतिशत ही रह गये। पारिवारिक श्रेणी में भी 0.29 प्रतिशत की कमी अंकित की गई 2011 में पारिवारिक श्रेणी में कुल जनसख्या का 1.24 प्रतिशत सम्मिलित था जो की 2021 मे घट कर मात्र 0.95 प्रतिशत ही रह गया।

जनपद कौशाम्बी की कार्यकारी जनसंख्या की दशकीय वृद्धि – जनपद की कार्यकारी जनसंख्या की दशकीय वृद्धि के विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि कुल कार्यकारी जनसंख्या तथा सीमान्त कर्मकार जनसंख्या में सन 2011 से 2021 के मध्य 5.42 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गई जबकि 2011 से 2021 के मध्य कुल मुख्य कर्मकारो में 3.51 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। व्यवसायिक संरचना मे इस वृद्धि का कारण शहरीकरण के स्तर में वृद्धि, अर्थव्यवस्था मे विविधीकरण, लोगो की सामाजिक आर्थिक उन्नति तथा उद्योगों में वृद्धि मुख्य कारण रहें है। सन 2011 से 2021 के मध्य अध्ययन क्षेत्र में शैक्षिक तथा समाजिक स्तर में भी पर्याप्त सुधार हुआ हैं।

गैर श्रमिकों का विकास अध्ययन क्षेत्र में जनसख्या वृद्धि, बेरोजगारी और आश्रित जनसंख्या की ओर संकेत करता है। अर्थव्यवस्था के विविधीकरण की प्रकिया स्वतन्त्रता के पश्चात शुरू हुई थी जिसमें अर्थव्यवस्था के द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों के विस्तार के साथ इसमें तेजी आई परिणाम स्वरूप कृषक जनसख्या मे कमी आई तथा उत्तरा

आधिकार कानूनो के परिणाम स्वरूप भूमि जोतो के आकार मे छोटा होने से सीमान्त कृषको के उन्मूलन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई (थिरूमलाई 1954)। सन 2011 की जनगणना के अनुसार कौशाम्बी जनपद मे कुल श्रमिको में कृषको का अनुपात 9.73 प्रतिशत था जो कि 2021 मे घट कर 6.49 प्रतिशत रह गया है इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कुल जनसख्या में कृषक अनुपात घट रहा है परन्तु इसी समय कृषि श्रमिको मे वृद्धि, हुई जो कि 2011 मे 6. 04 प्रतिशत थी 2021 मे बढ़ कर 9.94 वृद्धि हुई।

इस तरह सन 2011 से 2021 के मध्य कृषक, पशुपालन तथा पारिवारिक श्रेणियो मे क्रमशः 3 24 प्रतिशत 6 13 प्रतिशत तथा 0 29 प्रतिशत की वृद्धि की गयी है। यह कृषि से श्रमिको के विभिन्न गतिविधियो या गैर कृषि कार्यो मे स्थानातरण होने के कारण हुआ है। इसके अतिरिक्त ग्रामीणों मे शिक्षा तथा जागरूकता का प्रसार लोगो को विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों को अपनाने मे सफल हुआ हैं।

पशुपालन तथा पारिवारिक गतिविधियों की परमपारिक व्यवसायिक संरचना मे भी पर्याप्त बदलाव हुआा है। सन 2011 में पशुपालन मे 10.07 प्रतिशत जनसख्या संलग्न थी जो कि 2021 मे घटकर 3.94 रह गई इस श्रेणी में सर्वाधिक कमी 6.13 प्रतिशत अंकित की गई। पारिवारिक उद्योगो में लगे श्रमिकों मे 2011 से 2021 के मध्य 0.29 प्रतिशत की कमी अंकित की गई है।

कृषि से गैर कृषि गतिविधियो की ओर श्रमिको का स्थानतरण – कृषि से गैर कृषि श्रमिको मे कार्यकाल का स्थानतरण विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में उनका समायोजित होना है जनपद की जनसख्या की समाजिक स्थिति को स्पष्ट करता हैं। विभिन्न कार्यबल श्रैणीयो मे और उनके अनुपात की प्रवृत्ति किसी क्षेत्र की व्यावासायिक संरचना में परिवर्तन के प्रतिरूप को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। दूसरी तरफ गैर कृषि कार्यो मे लगे श्रमिको जिनमें पारिवारिक उद्याोगो मे लगे श्रमिक और अन्य श्रमिक कर्मकार दोनो शामिल है में क्रमशः कमी और वृद्धि का संकेत करते है ।

सारणी संख्या.–3

कौशाम्बी जनपद में 2011 से 2021 के मध्य कृषि कामगार और गैर कृषि कामगार जनसंख्या

श्रेणी	जनसंख्या 2011	जनसंख्या 2021
कृषि कामगार	27.71	21.42
गैरकृषि कामगार	72.29	78.58

चित्र संख्या –3

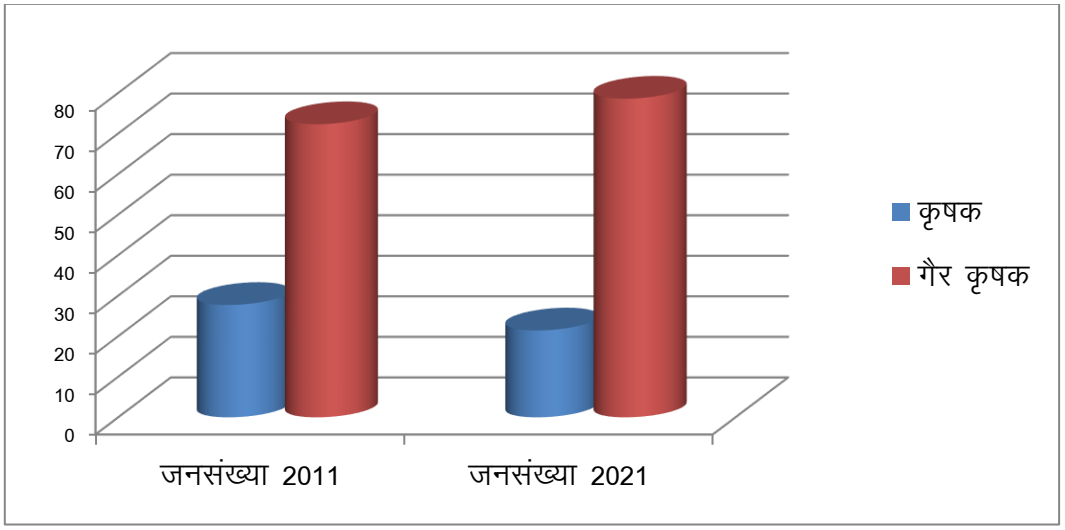

सन 2011 की जनगणना के अनुसार गैर कृषि कार्यो में लगे श्रमिको का प्रतिशत 72.29 था जो की सन 2021 मे बढ़ कर 78.58 प्रतिशत हो गया जो कि सकारात्मक वृद्धि को दर्शाता है।

निष्कर्ष – जनपद कौशाम्बी की कार्यशील जनसंख्या प्रवृत्ति के विशलेषण से यह पता चलता है कि कुल श्रमिको मुख्य और सीमान्त मे 2011 ये 2021 के मध्य 2.51 प्रतिशत की दशकीय वृद्धि अंकित की गई है। जब की कुल कृषि श्रमिको मे कमी र्दज की गई है इसका कारण जनसंख्या वृद्धि तथा कृषि जोतो का विभाजन रहा हैं। जबकि गैर कृषि श्रमिक तथा कृषिश्रमिक वर्ग मे वृद्धि अंकित की गई है श्रमिक वर्ग मे वृद्धि का कारण जनसंख्या वृद्धि के साथ ही रोजगार के अवसरो का विकास तथा सूक्ष्म एवं लघु उद्योगो का बड़े पैमाने पर विकास माना जा रहा हैं। 2011 से 2021 के दैरान कुल कृषि श्रमिको मे 3.24 तथा पारिवारिक श्रेणी मे 0.29 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई।

दूसरी ओर कुल कर्मकार मे 2.51 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गई जो यह संकेत करता है कि श्रमिको का कृषि गतिविधियो से उद्योग तथा निर्माण कार्य जैसे कार्यों भी और आधिक आकर्षण हुआ है। जहॉ तक व्यापक औद्योगिक श्रेणियो मे श्रमिको का सम्बध हैं 2011 से 2021 के दौरान 6.26 प्रतिशत की वृद्धि रही है जबकि अन्य की दशकीय वृद्धि दर औसत से थोड़ी अधिक रही हैं। उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट सकेत मिलता है कि कृषि वर्ग से गैर कृषि कायो की तरफ श्रमिको के रूझान मे उल्लेखनीय रूप से बदलाव देखने को मिलता है।

संन्दर्भ ग्रन्थ –

1 ओझा, आर0 एन0 (1983), जनसंख्या भूगोल, प्रतिभा प्रकाशन, कानपुर।

2 प्राथमिक जनगणना सार 2011 उत्तर प्रदेश ।

3 चॉदना और सिध्द्रू 1990 इन्टोडक्शन टू पापुलेशन ज्योग्रफी कल्याणी पब्लिशर्षर नई दिल्ली।

4 कृष्णामूर्ति जे 1978 सम फिचर्स आफ इम्प्लावयमेन्ट सिचुवेशन आफ इण्डिया डेमोग्राफी आफ इण्डिया।

5 मैत्रा 1969 भारत मे औद्योगिकरण और व्यवासाय का बदलता प्रतिरूप 1901 से 1961 टेण्डस आफ इकोनामिक चेंज इन इण्डिया।

6 राधाकृष्णनन एम और विजया लक्ष्मी 1974 डेमोग्राफी स्टक्चर आफ लेबर फोर्स इन आन्ध प्रदेश मैनपावर जर्नरनल 10.2पीपी86.98।

7 सिन्हा जे एन लेबर फोर्स इन इण्डिया पाकिस्तान और श्रीलंका प्रोसीडिग आफ द इण्टर नेशनल पापुलेशन कान्फेन्स 1969 लंदन वैल्युॅम थर्ड पी पी 1528 15 ।